om-11 INITIAL_Page 1 and 2 12-08-2014 11:59 Page 4

श्रीकृष्ण जन्म जेल में या महल में.. ?

भारत त्यौहारों का देश है। जन्माष्टमी उन त्यौहारों में एक अति आकर्षक पर्व है। इस दिन सभी भक्तों का मन कृष्णमय हो जाता है। श्रीकृष्ण के मंदिर सज जाते हैं। चारों ओर उनके ही गीत गूँजारित होते रहते हैं। अनेक लोग व्रत रखते हैं और आह्वान भी करते हैं कि हे प्रभु, आप पुन: कब आओगे क्योंकि वो समझते हैं कि श्रीकृष्ण ही पालनहार हैं, तारनहार हैं, विष्णु के साकार स्वरुप हैं और अब तो धर्म की ग्लानि का समय है तो अब तो उन्हें अवश्य आना चाहिए।

सभी लोग श्रीकृष्ण को बहुत प्यार करते हैं। जानते हो क्यों? यूँ तो राम के प्रेमी भी बहुत हैं तो शिव शक्तियों को भी प्यार करने वालों की कमी नहीं, परंतु ये देखा जाता है कि श्रीकृष्ण के भक्त तो निरंतर ही उनको दिल में समाकर रखते हैं। क्या ये सोचकर कि उन्होंने सबका उद्धार किया था तो वो हमारा भी उद्धार करेंगे या इसका कोई और भी कारण है?

श्रीकृष्ण को लोग बहुत प्यार करते हैं क्योंकि वे सबसे ज्यादा पवित्र हैं। पवित्र आत्मा ही दूसरों को आकर्षित करती है। ये बात सुनकर शायद आप सोचते होंगे कि उनको तो 8 पटरानियाँ थी और उन्होंने 16108 कन्याओं को शिशुपाल की जेल से छुड़ाकर उनसे विवाह किया था तो ऐसा व्यक्ति जिसकी हजारों रानियाँ हों, पवित्र कैसे रह सकता है? परंतु यह भी सोचने की बात है कि किसी एक मनुष्य की हजारों रानियाँ कैसे हो सकती हैं और उनसे लगभग डेढ़ लाख संतान की उत्पत्ति कैसे संभव है? सच तो यही है कि वे सम्पूर्ण पवित्र, सम्पूर्ण निर्विकारी, 16 कला सम्पूर्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम थे।

श्रीकृष्ण सतयुग के प्रथम राजकुमार थे — दिखाया गया है कि प्रलय के बाद श्रीकृष्ण पीपल के पत्ते पर अगूँठा चूसते हुए आए। यह इसी बात का प्रतीक है कि प्रलय के बाद पुन: सतयुगी सृष्टि का उदय होता है और श्रीकृष्ण का वहाँ आगमन हुआ। कई लोग ये भी मानते हैं कि श्रीकृष्ण का आविर्भाव द्वापरयुग के अंत में हुआ और उन्होंने महाभरत युद्ध का संचालन किया। मोहग्रस्त अर्जुन को गीता ज्ञान दिया और आसुरी संप्रदाय का विनाश कराकर दैवी संप्रदाय की स्थापना की, परंतु सोचने की बात है कि द्वापर के बाद तो अधर्म का युग कलयुग आ गया तो सत्धर्म की स्थापना कहाँ हुई? ईश्वरीय ज्ञान के आधार से हम जानते हैं कि श्रीकृष्ण सतयुग के प्रथम राजकुमार थे।

उनका जन्म जेल में नहीं महल में — ये तो सर्वविदित है कि श्रीकृष्ण का जन्म मध्यरात्रि में कंस के कारावास में हुआ था। इस बात पर जरा चिंतन कीजिये - जो बहुत महान आत्माएँ होती हैं, पवित्र आत्माएँ होती हैं, जो अति भाग्यवान होते हैं, उनका जन्म तो ब्रह्ममुहूर्त में ही होता है क्योंकि तब प्रकृति पवित्र होती है। पवित्र प्रकृति पवित्र आत्माओं का आह्वान करती है। जेल में तो कष्टों में उनका जन्म होता है जिनके कर्मों का खाता बहुत जटिल हो। श्रीकृष्ण तो सबसे अधिक पुण्यात्मा थे। वो तो सम्पूर्ण थे इसलिये उनका जन्म जेल में नहीं राजमहलों में हुआ था। असुर संहार के लिए तो निराकार परमात्मा का अवतरण होता है। सबके उद्धारक तो वही हैं। श्रीकृष्ण का जन्म तो बैकुण्ठ पर राज्य करने के लिए हुआ था इसलिये उनको वैकुण्ठनाथ भी कहा जाता है। भले ही शास्त्रों में ऐसे चमत्कारिक वृत्तांत लिखे हों कि उनके जन्मते ही उनके पिता उन्हें गोकुल ले गए लेकिन अब भगवान ने बताया है कि श्रीकृष्ण के जन्म के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ, वे तो बचपन से ही अति महान, अति भाग्यवान थे।

श्रीकृष्ण ने देवपद कैसे पाया?

कहा गया है — मनुष्य से देवता किए करत ना लागी वार। ज्ञान के सागर परमात्मा ही कल्पांत में सत्य ज्ञान देकर उसका आचरण कराते हैं। उन्हीं के लिए तो कहा गया है कि नर ऐसी करनी करे जो नारायण बन जाए और नारी ऐसी करनी करे जो लक्ष्मी बन जाए। जब भगवान धरा पर आते हैं तो श्रीकृष्ण की आत्मा जन्म लेते-लेते जब कलयुग के अंत में पहुँचती है तब निराकार परमात्मा उनके तन में प्रवेश करते हैं और उनका नाम रखते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। ईश्वरीय ज्ञान लेकर ब्रह्मा भी सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी और सर्वश्रेष्ठ योगी बनते हैं । वे अपने जीवन में महान समर्पण करते हैं और महान तपस्वी बनते हैं। उनके द्वारा ही परमात्मा नयी सृष्टि रचने का दिव्य कर्तव्य करते हैं और वही सतयुग में जाकर सतयुग के प्रथम राजकुमार श्रीकृष्ण बनते हैं। सतयुगी दैवी स्वराज्य की स्थापना कर निराकार परमात्मा ये सृष्टि की सत्ता उनके हाथ में सौंपकर अपने धाम में चले जाते हैं और वे पालनहार बनकर सतयुगी दैवी स्वराज्य को संभालते हैं। जब वे गद्दी पर बैठते हैं तो उन्हें ही श्री नारायण कहा जाता है।

ये समय चल रहा है जबकि स्वयं परमात्मा सत्य ज्ञान देकर मनुष्य को देवता बना रहे हैं जो सतयुग-त्रेतायुग में देवकुल की आत्माएँ थीं, वे अब पुन: राजयोग की तपस्या करके देवपद पाने के लिए श्रेष्ठ साधना कर रही हैं।

इस जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण जैसा बनने का संकल्प लें — जन्माष्टमी के दिन सभी उनके प्यार में व्रत रखते हैं। व्रत तो हम जन्म-जन्म रखते आए और सोचते आए कि उनकी भक्ति और व्रत से वो प्रसन्न हो जाएँगे और प्रसन्न होकर मनइच्छित फल प्रदान करेंगे। प्रसन्न तो वे सदा ही रहते हैं परंतु वे उन पर बहुत प्रसन्न होते हैं जो उन जैसा पवित्र बनने का व्रत लेते हैं। तो इस जन्माष्टमी पर हम व्रत लें कि इस भारत को स्वर्ग बनाने के लिए ईश्वरीय आज्ञाओं पर चलकर हम पवित्र बनेंगे और अपने खानपान को सात्विक करेंगे। तामसिक भोजन का भोग कभी श्रीकृष्ण को नहीं लगाया जाता। यदि आपको सचमुच श्रीकृष्ण से प्यार है तो अपने भोजन और जीवन को सात्विकता से भर लें।

क्या हम श्रीकृष्ण को इन आँखों से देख सकेंगे?

हमारे चित्रों में लिखा है कि इस महाभारी महाविनाश के बाद शीघ्र ही श्रीकृष्ण आ रहे हैं। सभी लोग पूछते हैं कि आखिर और कितने वर्ष लगेंगे। तो हम आपको बता दें कि अब आपको लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा। संगमयुग के 100 वर्ष पूर्ण होते ही श्रीकृष्ण का आगमन इस धरा पर हो जाएगा परंतु याद रहे कि श्रीकृष्ण के चरण इस पतित धरती पर नहीं पड़ सकते। महाविनाश के बाद जब ये वसुधा पावना हो जाएगी, जब प्रकृति शांत व शीतल हो जाएगी, तब उस सर्वश्रेष्ठ महान आत्मा का जन्म इस धरा पर होगा।

परंतु इस पवित्र आत्मा को इन अपवित्र नयनों से नहीं देखा जा सकेगा। उन्हें तो वही देख सकेंगे जिन्होंने अपनी आँखों को भी बहुत पवित्र बनाया होगा। इस जन्माष्टमी पर हमारी सबके लिए यही शुभकामना है कि आप अपने अंग-अंग को शीतल और सुगंधित करें ताकि श्रीकृष्ण के साम्राज्य में आप भी प्रवेश पा सकें। तब आपको उनकी पूजा नहीं करनी होगी, बल्कि उनके साथ का परमानंद प्राप्त होगा।

- ब्र.कु.सूर्य, मधुबन ।

राँची। झारखण्ड के गवर्नर डॉ. सईद अहमद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला,सेवाकेन्द्र संचालिका।

कोचीन। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश वी.आर. कृष्णा अय्यर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा। साथ हैं ब्र.कु. वासन।

रायपुर। विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल को रक्षासूत्र बोधते हुए ब्र.कु.सविता ।

सोनई। समाजसेवी अन्ना हजारे जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उषा। साथ हैं ब्र.कु. दीपक।

दिल्ली-मंडावली। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सिरसा।

टिकरापारा-विलासपुर। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आध्यात्मिक कार्यक्रम में दिव्य उद्बोधन देते हुए ब्र.कु. मंजू तथा ध्यानपूर्वक सुनते हुए श्रोतागण।